मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50
वार्षिक ₹ 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

उत्तर - साक्षरताकर्मियों के लिए

नवंबर 2012 वर्ष 17, अंक 11

पाकुड़ में पुस्तक लोकार्पण एवं संगोष्ठी

पुस्तक लोकार्पण के अवसर पर, बाएँ से, सुधीर हेम्ब्रम, शिशिर कुमार मिश्र, टी.पी. भगत, अशोक प्रियदर्शी, चंद्र शेखर झा, बलदेव सिंह बद्दन तथा बालेश्वर साहनी

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया की ओर से 6 अक्तूबर, 2012 को के.के.एम. कॉलेज, पाकुड़ में कॉलेज और 'मानवी' संस्था के सहयोग से एक दिवसीय साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में ट्रस्ट की ओर से प्रकाशित छह नवीनतम हिंदी पुस्तकों का लोकार्पण किया गया, जिनमें चार पुस्तकें नवसाक्षर साहित्यमाला की थीं। ये पुस्तकें थीं : *बिरसा की कहानी, उड़ान, नीम की बेटी* और *पढ़ना है*। इस अवसर पर 'जनजातीय समाज में पठन-अभिरुचि का विकास कैसे हो' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया। संगोष्ठी में यह बात उभरकर आई कि जनजातीय समाज के आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक विकास के लिए सामूहिक प्रयास की जरूरत है। जनजातीय समाज में पठन-पाठन में अभिरुचि के विकास को लेकर अध्यापन का माध्यम क्षेत्रीय भाषा सुनिश्चित करनी होगी। जनजातीय बच्चों के अनुकूल पत्रिका या समाचार पत्र के नहीं होने की भी बात उठी। वक्ताओं के अनुसार, जब तक कक्षा पाँच तक मातृभाषा में बच्चों को शिक्षा नहीं दी जाएगी, तब तक छोटे-छोटे जनजातीय समूहों की भाषाओं को बचाना संभव नहीं है। पठन-पाठन अभिरुचि पैदा करने में लड़कियों एवं महिलाओं की बड़ी भूमिका है। बच्चों की शिक्षा का माध्यम उनकी मातृभाषा हो। शिक्षा विकास की रीढ़ है। शिक्षा के बिना विकास संभव नहीं है। इसके लिए भाषा का ज्ञान होना अनिवार्य है। गुणात्मक शिक्षा का विकास तभी संभव है जब लोगों में पढ़ने के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न हो।

शिक्षा ऐसे वातावरण की बुनियाद है जिसमें मनुष्य मैत्री और समानता के धरातल पर एक-दूसरे से मिलते हैं।

—मौलाना अबुल कलाम आजाद

जयंती, 11 नवंबर, राष्ट्रीय शिक्षा दिवस

मैं हैरत में पड़ जाता हूँ, जब देखता हूँ कि लोग किसी राष्ट्र का भविष्य जानने के लिए वहाँ के शहरों को देखते हैं, लेकिन जब मुझे हिंदुस्तान का भविष्य देखने की इच्छा होती है तो मैं केवल बच्चों की आँखों और उनके चेहरों को देखने की कोशिश करता हूँ, क्योंकि वहीं मुझे आने वाले हिंदुस्तान की तस्वीर नजर आती है।

—जवाहरलाल नेहरू

जयंती, 14 नवंबर, बाल दिवस

ये ही कल का सूरज हैं प्यारे-से बच्चे
सभी का हैं सब कुछ दुलारे ये बच्चे
घृणा द्वेष नफरत बुराई न जानें
हैं सच्चे हमारे-तुम्हारे ये बच्चे
उन्हें एकता का पहाड़ा पढ़ाएँ
चलो सब चलें देश आगे बढ़ाएँ।

डॉ. बी.पी. दुबे, सागर, म.प्र.

1 नवंबरः राष्ट्रीय लेखक दिवस

राष्ट्रीय लेखक दिवस की अवधारणा संयुक्त राज्य अमरीका की है। इस अवधारणा के उद्भव के पीछे एक दिलचस्प कथा है। अमरीका के एक राज्य इलिनॉइस की बेमेंट वीमेंस क्लब की अध्यक्ष नील वेर्ने बर्ट मैकफर्सन के दिमाग में यह विचार आया था। पहले महायुद्ध के दौरान, जब वह एक शिक्षिका थीं, वे अस्पताल में स्वास्थ्य लाभ कर रही थीं। वह एक पढ़ाकू किस्म की महिला थीं और जीवनभर उन्होंने खूब किताबें पढ़ीं। अस्पताल में रहते हुए भी वह अपने प्रिय लेखक इरविंग बैचलर की एक कथा पुस्तक पढ़ रही थीं। वहीं से उन्होंने लेखक को पत्र लिखा और बताया कि उन्हें उनकी पुस्तक पढ़कर कितना आनंद आ रहा है। प्रत्युत्तर में लेखक ने उन्हें अपनी एक दूसरी कथा पुस्तक अपने हस्ताक्षर के साथ पढ़ने के लिए भेजी। मैकफर्सन सोच नहीं पा रही थीं कि वह कैसे अपने प्रिय लेखक का धन्यवाद अदा करे। तब उन्होंने वीमेंस क्लब की सामान्य परिषद के सामने राष्ट्रीय लेखक दिवस की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसने अमरीकन लेखकों के सम्मान के लिए 1 नवंबर की तारीख का संकल्प पारित किया। 1949 में अमरीका के कॉमर्स विभाग ने इस तिथि को मान्यता प्रदान कर दी।

मैकफर्सन की पोती सू कोले 1968 में अपनी दादी की मृत्यु के बाद राष्ट्रीय लेखक दिवस मनाने को लेकर बेहद सक्रिय हुईं। उन्होंने लोगों से अपने प्रिय लेखक को इस दिन अपना मनोभाव लिखकर व्यक्त करने की अपील की, जिससे एक लेखक एकांत और अकेलेपन के अपने सृजनकर्म में थोड़ा-बहुत आनंद पा सके।

उन्होंने लोगों से अपील की कि इस तिथि को लोग राष्ट्रीय झंडा फहराकर भी उन लेखकों के प्रति अपना सम्मान व्यक्त कर सकते हैं जिन्होंने अमरीकी साहित्य के सृजन में अपना जीवन समर्पित किया है।

हरिवंश राय बच्चन
जन्मदिन स्मरण : 27 नवंबर, 1907

जो बीत गई सो बात गई

जीवन में वह था एक कुसुम
थे उस पर नित्य निछावर तुम
वह सूख गया तो सूख गया
मधुबन की छाती को देखो
सूखी कितनी इसकी कलियां
मुरझाई कितनी वल्लरियां
जो मुरझाई फिर कहां खिलीं
पर बोलो सूखे फूलों पर
कब मधुबन शोर मचाता है
जो बीत गई सो बात गई

(हरिवंश राय बच्चन की बेहद प्रसिद्ध कविता)

प्रेरणा

शेखावटी में मुसलिम बालिका समाज में जगी शिक्षा की अलख

राजस्थान का शेखावटी क्षेत्र इन दिनों स्त्री शिक्षा की रौशनी में नहा रहा है। तकरीबन डेढ़ दशक से इस क्षेत्र में मुसलिम बालिका शिक्षा के क्षेत्र में बड़ा परिवर्तन आया है। पहले जहाँ लोग बेटियों को स्कूल भेजने से परहेज करते थे वहीं अब लड़कियाँ अपनी माँ, दादी, नानी के साथ खुशी-खुशी स्कूल आ रही हैं। स्कूल में लड़कियों से दाखिले की फीस नहीं ली जाती। स्कूल यूनीफॉर्म मुफ्त दी जाती है।

विदित हो कि स्कूल की शुरुआत महज 27 लड़कियों से हुई थी लेकिन अब यह संख्या बढ़कर 3000 हो गई है। इस स्कूल की खासियत सांप्रदायिक सद्भाव है। यहाँ हिंदू लड़कियाँ भी शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। स्कूल में कम्प्यूटर शिक्षा की भी व्यवस्था है।

समाज के डर से लड़कियों को स्कूल भेजने से डरने वाले लोग बच्चियों को पढ़ते-बढ़ते देख रहे हैं, यह बड़ा बदलाव है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि बेटियों को बराबरी का मौका मिल रहा है। स्कूल में पढ़ने वाली एक बालिका का कहना है– परिवारवाले मुझे स्कूल नहीं भेज रहे थे, लेकिन मैंने जिद करके स्कूल आना शुरू किया। अब मैं पढ़-लिखकर परिवार का नाम रोशन करना चाहती हूँ।

मिसाल

स्त्री सशक्तीकरण की पहल

देश से बाहर एक बड़ी कंपनी में बड़े ओहदे पर काम कर रहे सैम सिंह को एक दिन अपनी मिट्टी की महक वापस खींच लाई। आज उनकी 'परदादा-परदादी एजुकेशनल सोसाइटी' अपने अनूठे ढंग से इस बात की व्यवस्था करती है कि इलाके की लड़कियों की पढ़ाई न रुके। इसकी तरफ से स्कूल में पढ़ने वाली लड़कियों को दिन में तीन बार का भोजन दिया जाता है। हर दिन की हाजिरी के हिसाब से 10 रु. उनके बचत खाते में जमा करवाए जाते हैं। यह पैसा वे स्नातक पूरा होने के बाद निकाल सकती हैं। स्कूल में दो साल बिताने के बाद हर लड़की को एक साइकिल और तीन साल होने पर उनके घर पर एक शौचालय मुफ्त दिया जाता है। लड़कियाँ आधा दिन पाठ्यक्रम पढ़ने में बिताती हैं तो आधे दिन में कढ़ाई-सिलाई जैसे व्यावसायिक हुनर सीखती हैं। जो स्कूल सैम सिंह ने सन् 2000 में अपनी जमापूँजी के साथ सिर्फ 35 लड़कियों से शुरू किया था, आज उसमें 1,000 से ज्यादा लड़कियाँ पढ़ती हैं। स्कूल की बिलकुल शुरुआती छात्राओं में 50 से ज्यादा स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद या तो आगे पढ़ रही हैं या व्यावसायिक क्षेत्रों जैसे फैशन डिजाइनिंग, अध्यापन, उड्डयन आदि में कामयाबी की इबारत लिख रही हैं। जहाँ आज भी महिला साक्षरता दर 43 प्रतिशत हो और लड़कियों की शादी किशोरावस्था में ही कर दी जाती हो वहाँ यह छोटी बात नहीं है। *साभार :* **तहलका** पत्रिका

संदर्भ : राष्ट्रीय शिक्षा दिवस, 11 नवंबर

शिक्षा पर विद्वानों के विचार

जो बच्चों को शिक्षित करते हैं वे माता-पिता से अधिक सम्माननीय हैं, क्योंकि माता-पिता तो केवल जन्मदाता हैं, जीने की कला तो शिक्षक ही सिखाते हैं। **–अरस्तू**

प्रत्येक शिक्षा का उद्देश्य सेवा की होना चाहिए, और यदि किसी विद्यार्थी को पढ़ाई के दौरान ही यह अवसर मिल सके तो उसे इस अवसर को अपनी पढ़ाई का ही हिस्सा मानकर इसका लाभ अवश्य उठाना चाहिए। **–महात्मा गाँधी**

शिक्षा एक ऐसे वातावरण के सृजन का आधार है जिसमें मनुष्य एक-दूसरे से मैत्री एवं समानता के धरातल पर मिल सकते हैं। **–मौलाना अबुल कलाम आजाद**

बच्चों को पैसे से नहीं ज्ञान से समृद्ध बनाएँ, क्योंकि अज्ञानता की दौलत की अपेक्षा ज्ञानवान होने में आशाएँ अधिक हैं। **–एपिक्टेटस**

अबुल कलाम आजाद के बारे में नेहरू

"वे एक महान लेखक थे और अन्य बहुत-सी बातों में भी वे महान थे। ...मौलाना आज़ाद भारत की इस मिली-जुली सभ्यता के विशिष्ट प्रतिनिधि थे, जो कालांतर में भारत में विकसित हुई। ...बड़े आदमी पैदा होते आए हैं और पैदा होते रहेंगे लेकिन मौलाना जिन विशिष्टता और महानता के मालिक थे, वह भारत या किसी और जगह नजर न आ सकेंगी।"

–जवाहरलाल नेहरू

मेरी दुनिया, तुम्हारी दुनिया, उनकी दुनिया
हम सबों की दुनिया
मेरे बच्चे तुम्हारे बच्चे उनके बच्चे
हम सबों के बच्चे
उनका वर्तमान, उनका भविष्य
भविष्य के सभी बच्चे
उनका सुनहरा संसार
उनकी किलकारियाँ, उनकी खुशियाँ,

युद्ध और दंगों के खतरों को क्यों न हटाएँ
अन्याय के खिलाफ क्यों न लड़ें,
सभी बच्चों के अच्छे मुस्तकबिल के लिए

वे बच्चे भी हमारे ही बच्चे हैं
उनकी चाहतें भी हमारी ही चाहतें हैं
उनकी खुशियाँ भी हमारी ही खुशियाँ हैं।

–युद्ध और दंगों के खिलाफ बच्चों के शुभचिंतकों के एक अंतरराष्ट्रीय समूह द्वारा जारी

नेहरू, बाल दिवस एवं दिवाली पर काव्य प्रस्तुति

देश आज अपना आजाद

डॉ. सुनील केशव देवधर

देश आज अपना आजाद, चाचा नेहरू जिंदाबाद
हर बच्चा था तुमको प्यारा, तुमने हरदम यही पुकारा
रहे देश अपना आजाद, चाचा नेहरू जिंदाबाद
एक तुम्हारा था बस नारा, काम करो आराम न प्यारा
न हो ये गुलशन बरबाद, चाचा नेहरू जिंदाबाद
विश्व शांति का स्वप्न तुम्हारा, हो पूरा संकल्प हमारा
रहे अमन सब हों आबाद, चाचा नेहरू जिंदाबाद।

प्यारे चाचा

शिवचरण चौहान

हम सबके थे प्यारे चाचा
सारे जग से न्यारे चाचा।
जेल गए विपदाएँ झेलीं
कभी न हिम्मत हारे चाचा।
किया देश को सब कुछ अर्पण
थे वह देश-दुलारे चाचा।
अपना जन्म दिवस बच्चों के
नाम कर गए प्यारे चाचा।
है गुलाब और बच्चे जब तक
तब तक अमर हमारे चाचा।

नेहरू चाचा आओ ना!

कृष्ण कुमार यादव

नेहरू चाचा आओ ना
दुनिया को समझाओ ना
बच्चे कितने प्यारे होते
दुनिया को बतलाओ ना।
नेहरू चाचा आओ ना
मंद-मंद मुस्काओ ना
तुम गुलाब की खुशबू से
बचपन को महकाओ ना।
नेहरू चाचा आओ ना
उजियारा फैलाओ ना
देशभक्त हों, पढ़ें-लिखें
ऐसा पाठ पढ़ाओ ना।

नन्हे-नन्हे बच्चे

अशोक 'आनन'

इस देश की ये शान हैं, नन्हे-नन्हे बच्चे
इस देश की ये आन हैं, नन्हे-नन्हे बच्चे।
हँसी होंठ की खो न जाए, रखना है यह ध्यान
इस देश की मुस्कान हैं, नन्हे-नन्हे बच्चे।
जोश लहू का किसी वजह से, पड़ न जाए ठंडा
इस देश पर कुर्बान हैं, नन्हे-नन्हे बच्चे।
जब भी इनके हृदय में उमड़ा, आया है परिवर्तन
इस देश में तूफान हैं, नन्हे-नन्हे बच्चे।
वक्त पड़ा तो खुशी-खुशी ये देंगे अपनी जान
इस देश पर बलिदान हैं, नन्हे-नन्हे बच्चे।
सत्य, अहिंसा, धर्म, कर्म ही, इनका जीवन लक्ष्य
इस देश के दिनमान हैं, नन्हे-नन्हे बच्चे।
इनका 'आनन' ढँक न दे, आकर कोई बादल
इस देश के दिनमान हैं, नन्हे-नन्हे बच्चे।

बचपन

बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

फूलों-सा मह मह महकता है बचपन
तितली-सा चंचल होता है बचपन।
सच के सिवा झूठ ना बोलता है बचपन
भौंरे की तरह घूमता है बचपन।
पापा-मम्मी के आँखों का तारा होता है बचपन
घर का राज दुलारा होता है बचपन।
जाति धर्म मजहब की बात ना सोचता है बचपन
जीवन में प्यार का रस घोलता है बचपन।

नेहरू, बाल दिवस एवं दिवाली पर काव्य प्रस्तुति

खेलने के लिए

कृष्णदेव चतुर्वेदी, *भोपाल, म.प्र.*

मैं चाहती हूँ, पक्षियों की तरह
सुबह-सुबह जागकर, फुदकते हुए चहचहाना
आपकी तरह जीना
भैया की तरह, सजकर स्कूल जाना
सीखना, जीवन जीने की कला
स्कूल में पढ़ाने वाली दीदी से
खूब सारी बातें बतियाना
मैं देखती हूँ, सुबह से शाम तक
खेलते हुए बच्चों को
जो नहीं खिलाते मुझे अपने साथ
क्योंकि मेरे पास नहीं है कोई खिलौना
खेलने के लिए
फाड़कर किताब का पन्ना
बनाई है कागज की नाव
इसे देखते ही मम्मी ने मारा
मेरे गाल पर तमाचा
कहते हुए क्यों फाड़ा
किताब का पन्ना!

बच्चे सबसे अच्छे

रामचरण यादव

सुबह-सुबह उठ जाते बच्चे
कभी हँसते कभी गाते बच्चे

भेदभाव नहीं रखते मन में
सबका दिल बहलाते बच्चे

घर आँगन खुशियों से महके
धमा चौकड़ी खूब मचाते बच्चे

कोई फिकर न रहती इनको
समय पर काम भी आते बच्चे

आज भले इन्हें समझ नहीं है
कल का भविष्य कहलाते बच्चे

चाहे कोई कुछ भी कहे पर
मेरे मन को बड़े ही भाते बच्चे

दिन भर तो स्कूल में पढ़ते
शाम को ही घर आते बच्चे

उनकी पीड़ा को कौन समझेगा
किसी को कुछ न बताते बच्चे

रिश्तों की चक्की में भी पिसते
पर अपना फर्ज निभाते बच्चे

सद्भाव के दीप

अशोक 'आनन'

मानव, मानव को अपनाए
आओ, ऐसा पर्व मनाएँ।

अलगाव का तम मिटाकर
सद्भाव के दीप जलाएँ।

दूरी जो है बीच हमारे
लगकर गले, उसे मिटाएँ।

सुलग रही जो आग हृदय में
सबसे पहले उसे बुझाएँ।

बैठ गया जो शक हृदय में
उसे हृदय से आज हटाएँ।

संकट की जब आए घड़ी तो
'आनन' क्यों न हिल-मिल जाएँ।

आज दिवाली आई है

बद्री प्रसाद वर्मा अनजान, *गोरखपुर, उ.प्र.*

हर तरफ उजालों की
चादर आज बिछाई है
रौशनी लुटाने को
आज दिवाली आई है।

छूट रहे हैं खूब पटाखे
हर जगह धूम मचाई है
अँधेरा को दूर भगाने
आज दिवाली आई है।

छोटे-छोटे दीपकों से
घर-आँगन को सजाई है
सब पर प्यार लुटाने
आज दिवाली आई है।

हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई
सबको गले लगाई है
सबका मुँह मीठा कराने
आज दिवाली आई है।

घर दुकान सब चमक रहे हैं
सबकी हुई सफाई है
नए-नए कपड़े पहनाने
आज दिवाली आई है।

शब्द-शब्द मोती-से सुंदर
हर पग दीप जलाते
जीवन की हर कला सिखाकर
नूतन पथ दिखलाते।
सुकीर्ति भटनागर, *पटियाला, पंजाब*

निरक्षरता
कवच है ज्ञान का
तोड़िए इसे।
आनंद बिल्थरे, *बालाघाट, म.प्र.*

ज्ञान से जीवन हरषाता है
खुशियों का वसंत छाता है
प्रकाश लौट-लौट आता है
अँधियारा जब छँट जाता है।
गोपीनाथ कालभोर, *खंडवा, म.प्र.*

हर बच्चा एक पेड़ लगाए
धरती पर हरियाली लाए।
अहद 'प्रकाश', *भोपाल, म.प्र.*

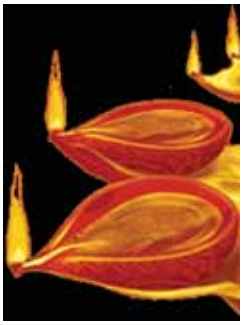

हम भी स्कूल जाएँगे
सब को स्कूल से जोड़ेंगे
शहर से लेकर गाँव तक
कोई बच्चा नहीं छोड़ेंगे।
कमलेश व्यास, *उज्जैन, म.प्र.*

दस्तावेज है पुस्तक
सभ्यता का, मानवता का
पढ़ें, गुनें, संभालें इसे।
नलिनीकांत, *अंडाल, प. बंगाल*

भारत में कोई भी राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली पूर्ण नहीं हो सकती जब तक देशभक्ति और राष्ट्रीयता अनिवार्य विषय नहीं बनाए जाते। —लाला लाजपत राय, पुण्यतिथि : 17 नवंबर, 1928

राष्ट्रीय पक्षी दिवस, 12 नवंबर

इंदिरा गाँधी जयंती, 19 नवंबर

बिरसा मुंडा जयंती, 15 नवंबर

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह, 14-20 नवंबर, 2012

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह प्रति वर्ष देश भर में 14 से 20 नवंबर की अवधि में मनाया जाता है। एनबीटी द्वारा देश भर में पुस्तक संबंधी गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं।

पाठकीय प्रतिक्रिया

☐ **अक्तूबर 2012, सा. सं. :** मुखपृष्ठ पर भगिनी निवेदिता से संबंधित लघु आलेख जानकारी बढ़ाने वाला था। कमलचंद वर्मा की लघुकथा 'सर्वश्रेष्ठ दान' दरिद्रता दूर करने के लिए विद्यादान, ज्ञानदान तथा कठिन परिश्रम करने की शिक्षा देने वाली थी। गाँधी जी एवं शास्त्री जी की जयंती पर काव्य प्रस्तुति अच्छी लगी। समस्त कविताओं के साथ अन्य रचनाएँ भी उपयोगी एवं प्रेरक थीं। **प्रो. शामलाल कौशल,** रोहतक, हरियाणा

☐ अन्य अंकों की तरह यह अंक भी बेहतरीन लगा। सभी रचनाएँ पठनीय, प्रेरक एवं संग्रहणीय लगीं। लघुकथा 'सर्वश्रेष्ठ दान' में विद्यादान का रोचक उपदेश है। प्रो. उषा यादव की रचना 'अब व्यंजन की बारी है' रोचकता के साथ ज्ञान बढ़ाने वाली थी। ट्रस्ट के नए अध्यक्ष श्री ए. सेतुमाधवन को शुभकामनाओं के साथ बधाई। **देवराज आर्यमित्र,** हरिनगर, नई दिल्ली

☐ शुरुआती तीन पृष्ठों की सामग्री प्रभावी है। नवचक्र जी का आलेख 'मिट्टी की पुस्तकें' जानकारीपरक है। पढ़ने-लिखने की ललक हमारे पूर्वजों में भी थी। जगन्नाथ 'विश्व' का शास्त्री जी पर काव्य रचना अंक का आकर्षण है। पृष्ठ 6 की क्षणिकाएँ अच्छी लगीं। नवसाक्षरों के लिए उषा जी की कविता पसंद आई। **आनंद बिल्थरे,** बालाघाट, म.प्र.

☐ **सितंबर '12 :** पिछले पाँच सालों से मैं **साक्षरता संवाद** पढ़ती आ रही हूँ। इसके प्रत्येक अंक में विशेष अवसरों, व्यक्तियों आदि से संबंधित लघु आलेख/कविताएँ अत्यंत प्रभावपूर्ण एवं महत्वपूर्ण होते हैं। मैंने सभी अंक फाइल करके रखे हैं। नवसाक्षरों में पठन रुचि जगाने का आप बड़ा काम कर रहे हैं। यह पत्रिका सामान्य परिवारों में पहुँचनी चाहिए। स्कूलों के छात्रों के साथ-साथ शिक्षकों के भी काम की है यह पत्रिका। नए विचारों से अवगत कराती है यह। **कांति अय्यर,** सूरत, गुजरात

☐ शिक्षक दिवस, साक्षरता दिवस और हिंदी दिवस पर केंद्रित यह अंक अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण बन पड़ा है। इन सब दिवसों से संबद्ध सामग्री तो इस अंक में है ही, हिंदी विषयक विशेष सामग्री के कारण अंक संग्रहणीय है एवं इसी कारण स्थायी महत्व का है। स्व. गोपाल सिंह नेपाली की कविता मर्मस्पर्शी है। प्रकाशित लेख ज्ञानवर्धक और उपयोगी हैं। उत्तर-साक्षरताकर्मियों के लिए प्रकाशित यह लघु पत्रिका सभी के लिए प्रेरक, उद्बोधक और दिश-निर्देशक है। सुंदर संपादन-प्रकाशन के लिए बधाई और अभिनंदन। **डॉ. सुंदरलाल कथूरिया,** जनकपुरी, नई दिल्ली

☐ हिंदी दिवस को समर्पित **सा. सं.** का सितंबर अंक बेहद रुचिकर लगा। पत्रिका निरंतर नई उपलब्धियाँ छू रही है। हर अंक सुंदर से सुंदरतम। उम्मीद है आगामी अंक भी ऐसी ही उत्कृष्टता से परिपूर्ण होंगे। **शंभु प्रसाद भट्ट 'स्नेहिल',** चमोली, उत्तराखंड

रचनाकार कृपया ध्यान दें : **कृपया पत्रिका के अनुकूल शिक्षा, साक्षरता, पुस्तक एवं पठन-पाठन से संदर्भित रचनाएं ही भेजें–प्रेरक, उद्बोधक। साफ एवं पठनीय शब्दों में लिखें, रचनाएं संक्षिप्त भेजें। बाल रचनाएं कृपया ट्रस्ट की 'पाठक मंच बुलेटिन' पत्रिका में भेजें।** *—संपा.*

पढ़ें-पढ़ाएँ

रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद'

साक्षरता के दीप जलाओ
निरक्षरता को दूर भगाओ
जन-जन में साक्षरता जागे
बिन अक्षर के रहें न अभागे
साक्षरता-मंत्र जिसको आता
जीवन में न वह घबराता
गली-गली में गूँजे नारा
शिक्षा पाना धर्म हमारा
जीना अनपढ़ का है दुश्वार
कदम-कदम पर उसको हार
बच्चे-बूढ़े, पढ़ें-पढ़ाएँ
जीवन बगिया को महकाएँ।

सिहाल, कांगड़ा, हि.प्र.

मात्रा ज्ञान

प्रो. उषा यादव

'घर चल' औ' 'सरपट' में देखो
मात्रा नजर न आएगी।
'आम' और 'आकाश' कहोगे
खड़ी लकीर (।) लुभाएगी।
'बिजली' में 'इ' (ि) 'ई' (ी) दोनों हैं
'बुलबुल' में उ (ु) पाया है।
'चूरन' में ऊ (ू) झाँक रहा
'केवट' में ए (े) मुस्काया है।
'गैस' शब्द से तो परिचित हो
ऐ (ै) को क्या पहचान सके?
'कोयल' में ओ (ो) की मात्रा है
'औरत' में औ (ौ) जान सके?
सीखीं सारी मात्राएँ अब
पढ़ने में कैसी देरी?
एक नहीं, दो नहीं, पुस्तकें
पढ़ लो जी तुम बहुतेरी।

आगरा, उ.प्र.

साक्षरता का दीप जलाओ

गोपीनाथ कालभोर

ऐसा-वैसा कुछ ना गाओ
साक्षरता का दीप जलाओ।

अक्षर लिखना-पढ़ना सीखो
पढ़े-लिखे की भाँति दिखो
मिट जाएगी अज्ञानता भी
गाँव के अपने स्कूल जाओ।

बात पते की बतलाता हूँ
रोज पढ़ाने मैं जाता हूँ
प्रौढ़ कक्षा में जो आते हैं
साथ उनके तुम पढ़ने आओ।

हस्ताक्षर करना सीखोगे
जमा-खर्च अपना देखोगे
पढ़ने से होता यह लाभ
मित्रों को अपने समझाओ।

ऐसा-वैसा कुछ ना गाओ
साक्षरता का दीप जलाओ।

खंडवा, म.प्र.

साक्षर बनें साक्षरता अपनाएँ
देश की महान संस्कृति को अपनाएँ
जिन वीरों ने अपनी बलिदानी दी
उनकी गाथाओं को नित गाएँ।

डॉ. पी.आर. वासुदेवन 'शेष', चेन्नई, तमिलनाडु

स्वयं पढ़ो औरों को पढ़ाओ
यही प्रगति का रूप है
जीवन में शिक्षा न हो तो
अंधकारमय कूप है।

रूपनारायण कावरा, जयपुर, राजस्थान

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया की
नवसाक्षर साहित्यमाला के अंतर्गत नवीनतम पुस्तकें

पुष्पा सिंह 'विसेन'
पृष्ठ 16 ₹ 11

रामशंकर चंचल
पृष्ठ 24 ₹ 13

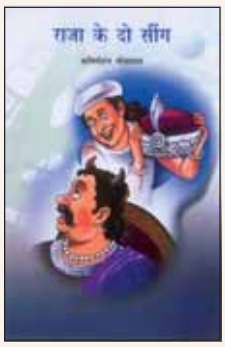

ऋषिमोहन श्रीवास्तव
पृष्ठ 12 ₹ 11

फारुख आफरीदी
पृष्ठ 12 ₹ 11

संदीप श्रीवास्तव
पृष्ठ 12 ₹ 11

सीमा व्यास
पृष्ठ 16 ₹ 11

R. N.I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/11/2012

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला

4 से 10 फरवरी, 2013

प्रगति मैदान, नई दिल्ली

प्रत्येक व्यक्ति का यह जन्मसिद्ध अधिकार है कि उसे कम-से-कम बुनियादी शिक्षा अवश्य मिले, जिसके बिना एक नागरिक के रूप में वह पूरी तरह अपने कर्तव्य का निर्वाह नहीं कर सकता। —मौलाना अबुल कलाम आजाद

जैसे बंद दरवाजे बच्चों को आकर्षित करते हैं कि खोलकर देखें, अंदर क्या है, वैसे ही किताबें मुझे खींचती हैं। हर किताब के दरवाजे के पीछे एक अलग दुनिया बंद है। —अज्ञात

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन सहयोग : **नरेन्द्र कुमार**

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः nbtindia@nbtindia.org.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 की ओर से सतीश कुमार, संयुक्त निदेशक (उत्पादन) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित; तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-I, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार के सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070